Dr. Kamari Kiran
Department of Home Science
Al-Hafeez College Ara

B.A Part III Paper VI Child Psychology (बाल-मनोविज्ञान)

Topic :— What do you understand by Play ? What is difference between Play and Work ?

<u>खेल क्या है? खेल और कार्य में अंतर</u>

मानव की सामान्य प्रवृत्तियों में खेल का भी महत्वपूर्ण स्थान है। सामान्य रूप से समझा जाता है कि केवल बच्चे ही खेल खेलते हैं परन्तु वास्तव में हर आयु के व्यक्ति के लिए खेल का महत्व है। मनुष्य के अतिरिक्त अन्य प्राणी जैसे पशु पक्षी में भी खेल का विशेष महत्व है। खेल के महत्व को प्रो० शुक्ला ने इन शब्दों में स्पष्ट किया है, — "जैसे एक कवि अपने को कविता लिखने से नहीं रोक सकता या एक गायक अपने को गाने से नहीं रोक सकता वैसे ही बच्चा भी अपने को खेलने से नहीं रोक सकता" अर्थात, खेल एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है।

खेल को परिभाषित करते हुए विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास किया है :—

① <u>श्री बी० एन० भाटी</u> — ने खेल को परिभाषित करते हुए कहा है —— . " खेल एक जन्मजात तथा स्वाभाविक प्रवृत्ति है जो अपने परिवार के लिए किसी प्रकार की ट्रेनिंग या शिक्षा की आवश्यकता नहीं रखता।"

②. <u>ब्लुक मलेक्य</u> —— ने खेल में स्वतंत्रता के महत्व को दर्शाते हुए लिखा है — " खेल वह है जो हम कुछ करते हैं जब कि हम अपनी इच्छानुसार करने को स्वतंत्र होते हैं"।

(3) कश्यप एवं पुरी ने खेल को परिभाषित करते हुए कहा है —
"खेल एक प्रक्रिया तथा रचनात्मक प्रवृत्ति है जो स्वाभाविक, स्वतंत्रता और आनन्ददायकता के विशेष लक्षणों द्वारा जानी जाती है"।

(4) थामसन ने खेल को परिभाषित करते हुए कहा है —
"खेल कुछ सुनिश्चित मूल प्रवृत्तिजन्य क्रियाओं को प्रकट करने की प्रवृत्ति है"।

उपर्युक्त वर्णित परिभाषाओं द्वारा खेल सामान्य प्रवृत्ति का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। हम कह सकते हैं कि खेल अपने आप में पूर्ण होता है तथा बालक अपने स्वभाव से ही खेल के लिए प्रेरित होता है। खेल वह प्रक्रिया है जो मनोरंजक होती है। यह रचनात्मक प्रवृत्ति है जो जन्मजात होने के साथ स्फूर्तिदायक, स्वतंत्र, स्वलक्षित तथा आनन्दात्मक होती है। इसलिए वैलेन्टाइन ने कहा है "खेल वह प्रक्रिया है जो खेल के लिए ही की जाती है"।

खेल तथा कार्य में अन्तर —

खेल तथा कार्य दोनों में ही शारीरिक तथा मानसिक क्रियाशीलता होती है। कुछ लोगों का कहना है कि काम को भी खेल समझकर करना चाहिए। इसके विपरीत कुछ लोग खेल को भी कार्य के रूप में स्वीकार करने की राय देते हैं परन्तु इन कथनों से यह स्पष्ट नहीं होता कि खेल और कार्य में कोई मौलिक अन्तर नहीं है। वास्तव में इन दोनों में पर्याप्त अन्तर है। खेल तथा कार्य में अन्तर को निम्नवर्णित विवरण द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है —

(i) खेल नामक सामान्य प्रवृत्ति मनुष्य में जन्मजात रूप से पायी जाती है। इससे भिन्न कार्य करने की प्रवृत्ति परिस्थिति तथा वातावरण के प्रभाव से अर्जित की जाती है।

(2.) खेल स्वभाविक रूप से खेला जाता है परन्तु कार्य में नियमों का निर्धारण सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा होता है।

(3) कार्य का सम्बन्ध स्पष्ट रूप से यथार्थ जगत से होता है। इससे भिन्न खेल का सम्बन्ध मुख्य रूप से काल्पनिक जगत से होता है।

(4) खेल तथा कार्य मे एक अंतर उद्देश्य से भी सम्बन्धित है। खेल का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन होता है तथा यह उद्देश्य खेल क्रिया मे ही निहित रहता है। इससे भिन्न प्रत्येक कार्य का उद्देश्य विशिष्ट होता है तथा इस उद्देश्य का निर्धारण किसी अन्य कारक द्वारा होता है।

(5) खेल की क्रिया मे किसी प्रकार का बन्धन नही होता, इसके विपरीत प्रत्येक कार्य मे आंतरिक और बाहरी बन्धन आवश्यक होते है।

(6) कार्य मे रोकने मे किसी न किसी प्रकार का बाहरी दबाव अवश्य होता है परन्तु खेल की क्रिया सदैव ही व्यक्ति स्वेच्छा से करता है।

(7) खेल मे पड़ने वाले विघ्न को सहन नही किया जाता, परन्तु कार्य मे पड़ने वाले विघ्न की अवहेलना भी की जा सकती है।

(8) खेल का सम्बन्ध केवल खेल खेलने वाले यानि खिलाड़ी से होता है तथा खेल से केवल खिलाड़ी ही लाभान्वित होता है इससे भिन्न कार्य का सम्बन्ध कार्य करने वाले के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियो से भी होता है तथा वे भी लाभान्वित होते है।

(9) खेल मे जो आनन्द प्राप्त है वह उसी समय प्राप्त हो जाता है जब खेल की क्रिया की जाती है इसके विपरीत कार्य से व्यक्ति की शक्ति क्षीण होती है तथा खेल से चित्त प्रफुल्लित होता है।

(10) खेल तथा कार्य दोनो ही शारीरिक एवं मानसिक क्रियाशीलता होती है परन्तु इन दोनो के परिणाम भिन्न-भिन्न होते है खेल के परिणाम स्वरूप व्यक्ति के शक्ति मे वृद्धि होती है। इसके विपरीत

कार्य से व्यक्ति की शक्ति क्षीण होती है। कार्य में व्यक्ति में थकान होती है तथा खेल से मन प्रसन्न होता है।

(11) कार्य सामान्य रूप से व्यवसाय के रूप में किया जाता है तथा इसे जीविका उपार्जन का साधन माना जाता है इसके विपरीत खेल मनोरंजन के लिए होता है तथा उसे जीविका उपार्जन का साधन नहीं माना जाता है।

(12) खेल और कार्य की क्रिया में मूल्य एवं महत्व का भी अन्तर होता है खेल का मुख्य महत्व उसकी क्रिया में निहित रहता है परन्तु कार्य में ऐसा नहीं होता। इस तथ्य को ड्रेपर ने इन शब्दों में स्पष्ट किया है, "खेल में क्रिया का मूल्य और महत्व स्वयं क्रिया में पाया जाता है, जबकि कार्य की क्रिया का मूल्य और महत्व के परे एक लक्ष्य में पाया जाता है।

खेल की विशेषताएँ —

खेल के परिभाषाओं के आधार पर ही इसकी विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है। —

(1) यह एक जन्मजात प्रवृत्ति है
(2) यह एक आनन्दायक प्रवृत्ति है जैसे खेल रूपी क्रियाओं से व्यक्ति या बालक तनाव का अनुभव नहीं करता है वह निरंतर आनन्द से आनन्द प्राप्त करता है।
(3) खेल की प्रवृत्ति अपने-आप में रचनात्मक होती है।
(4) स्वतंत्रता भी हर प्रवृत्ति की एक विशेषता है।
(5) खेल की प्रवृत्ति में कोई न कोई कार्य निहित रहती है।
(6) खेल ही वह माध्यम है जिससे व्यक्ति आत्म प्रदर्शन करता है।
(7) खेल की प्रवृत्ति अपने आप में साध्य है, साधन नहीं।

खेल के प्रकार —

खेल के वैसे तो बहुत सारे प्रकार है लेकिन मुख्य प्रकार का यहाँ वर्णन किया जा रहा है।

① रचनात्मक खेल → जैसा कि कहा जा चुका है कि खेल की एक मुख्य विशेषता रचनात्मकता है। रचना प्रधान खेल को रचनात्मक खेल कहा जाता है समान्य रूप से देखा जाता है कि बच्चे तरह-तरह के मकान, खिलौने अथवा गाड़ी आदि बनाकर खेला करते है। ये खेल रचनात्मक खेल कहलाते है।

② गति खेल → कुछ खेलो मे शारीरिक रूप से गति विधिया अधिक होती है। समान्य रूप से इन गतियो का कोई उद्देश्य नही होता। इस प्रकार के खेलो को गति खेल कहा जाता है शैशवावस्था मे शिशु द्वारा निरुद्देश्य हाथ-पैर चलाते रहना, बालको का भाग दौड़, एक-दूसरे को पकड़ना आदि इसी प्रकार का खेल है।

③ लड़ाई के खेल → इस प्रकार के खेलो मे प्रतिस्पर्धा की भावना सबसे अधिक प्रबल होती है। इस तरह के खेलो मे एक से अधिक बालक मिलकर खेला करते है तथा इन खेलो मे एक-दूसरे को हराने की प्रवृत्ति रहती है। इस प्रकार के खेल व्यक्ति तथा व्यक्ति के मध्य भी हो सकते है तथा समूह एवं समूह के मध्य भी। कबड्डी, हॉकी, दौड़ तथा फुटबॉल आदि लड़ाई के खेल (Fighting Play) है। इस प्रकार के खेल बाल्यावस्था, किशोरावस्था तथा प्रौढ़ावस्था मे भी खेले जाते है।

④ बौद्धिक खेल —

कुछ खेलो मे शारीरिक क्रिया के अपेक्षा बौद्धिक क्रियाशीलता अधिक होती है। इस प्रकार के खेल को बौद्धिक खेल कहा जाता है। मर्के गुल ने बौद्धिक खेल के पुनः तीन वर्गो मे विभक्त किया है। जिसमे क्रमशः संवेगात्मक खेल, विचारात्मक खेल तथा इच्छात्मक खेल कहा गया है।

(5) परीक्षणात्मक खेल —

परीक्षणात्मक खेलों में जिज्ञासा वृत्ति प्रधान होती है। इन खेलों में जिज्ञासा वृत्ति के वशीभूत ही बच्चे सम्बन्धित वस्तुओं को उलटने - पलटने, खोलने, बन्द करने जैसे कार्य करते रहते हैं। इस प्रकार के खेलों में जहाँ एक ओर मनोरंजन होता है वहीं दूसरी ओर ज्ञान की वृद्धि होती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि बालक के जीवन में खेल का बहुत बड़ा योगदान है खेल वह क्रिया है जो जाने - अनजाने में बालक (व्यक्ति) शारीरिक विकास के साथ - साथ मानसिक विकास भी करता है। व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास भी खेल के माध्यम से होता है

—